اٰيَاتُهَا ٢٢　(٥٨) سُوْرَةُ الْمُجَادَلَةِ مَدَنِيَّةٌ (١٠٥)　رُكُوْعَاتُهَا ٣

उस में २२ आयतें हैं　सूरह मुजादला मदीना में नाज़िल हुई　और ३ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِىْ تُجَادِلُكَ فِىْ زَوْجِهَا

यक़ीनन अल्लाह ने सुन ली उस औरत की बात जो आप से झगड़ रही थी अपने शौहर के बारे में

وَتَشْتَكِىْٓ اِلَى اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ

और अल्लाह से शिकायत कर रही थी। और अल्लाह तुम दोनों की गुफ़्तगू सुन रहे थे। यक़ीनन अल्लाह

سَمِيْعٌ ۢ بَصِيْرٌ ۝١ اَلَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَآئِهِمْ

सुनने वाले, देखने वाले हैं। तुम में से वो मर्द जो अपनी औरतों से ज़िहार करें

مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ ؕ اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ اِلَّا الّٰٓـِٔىْ وَلَدْنَهُمْ ؕ

तो वो उन की हक़ीक़ी माएँ नहीं बन जातीं। उन की हक़ीक़ी माएँ तो वही हैं जिन्हों ने उन को जना है।

وَ اِنَّهُمْ لَيَقُوْلُوْنَ مُنْكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَزُوْرًا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ

और यक़ीनन वो बुरी बात और झूठी बात केह रहे हैं। और यक़ीनन अल्लाह बहोत ज़्यादा मुआफ

لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ۝٢ وَالَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْ نِّسَآئِهِمْ

करने वाला, बहोत ज़्यादा बख़्शने वाला है। और जो मर्द अपनी औरतों से ज़िहार करें,

ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا قَالُوْا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مِّنْ قَبْلِ

फिर वो वापस अपने कलाम से रूजूअ करें तो एक गर्दन आज़ाद करना है इस से पेहले के वो एक दूसरे को

اَنْ يَّتَمَآسَّا ؕ ذٰلِكُمْ تُوْعَظُوْنَ بِهٖ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ

छुवें। इस की तुम्हें नसीहत की जाती है। और अल्लाह तुम्हारे आमाल से

خَبِيْرٌ ۝٣ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ

बाखबर है। फिर जो (गुलाम) न पाए तो लगातार दो महीनों के रोज़े हैं

مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَآسَّا ؕ فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَاِطْعَامُ سِتِّيْنَ

इस से पेहले के वो एक दूसरे को छुवें। फिर जो इस की ताक़त न रखता हो तो साठ मिस्कीनों को खाना

مِسْكِيْنًا ؕ ذٰلِكَ لِتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ وَتِلْكَ حُدُوْدُ

खिलाना है। ये इस लिए है ताके तुम ईमान लाओ अल्लाह पर और उस के रसूल पर। और ये अल्लाह की मुक़र्ररा हुदूद

اللّٰهِ ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٤ اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ

हैं। और काफिरों के लिए दर्दनाक अज़ाब है। यक़ीनन वो लोग जो अल्लाह और उस के

اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ كُبِتُوْا كَمَا كُبِتَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ

रसूल से झगड़ते हैं ज़लील होंगे जैसा के ज़लील हुए वो जो उन से पेहले थे और यक़ीनन

اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝٥

हम ने साफ साफ आयतें नाज़िल की हैं। और काफिरों के लिए रुस्वा करने वाला अज़ाब है।

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ؕ

जिस दिन उन तमाम को अल्लाह उठाएगा, फिर उन को जतलाएगा वो अमल जो उन्हों ने किए।

اَحْصٰىهُ اللّٰهُ وَنَسُوْهُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝٦ ع

अल्लाह ने उस को गिन रखा है और उन्हों ने उस को भुला दिया है। और अल्लाह हर चीज़ को देख रहे हैं।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ

क्या आप ने देखा नहीं के अल्लाह जानता है उन चीज़ों को जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं।

مَا يَكُوْنُ مِنْ نَّجْوٰى ثَلٰثَةٍ اِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ

तीन आदमियों की कोई सरगोशी नहीं होती मगर अल्लाह उन का चौथा होता है और न पाँच आदमियों की

اِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَآ اَدْنٰى مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْثَرَ اِلَّا هُوَ

मगर अल्लाह उन का छठ्ठा होता है, और न उस से कम और न उस से ज़्यादा मगर वो उन के साथ

مَعَهُمْ اَيْنَ مَا كَانُوْا ۚ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ

होता है, जहाँ भी वो हों। फिर अल्लाह उन्हें उन आमाल की जो उन्हों ने किए क़यामत के दिन खबर देगा।

اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝٧ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نُهُوْا

यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाले हैं। क्या आप ने देखा नहीं उन लोगों की तरफ जिन को

عَنِ النَّجْوٰى ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَيَتَنٰجَوْنَ

सरगोशी से मना किया गया, फिर भी वो दोबारा करते हैं उसी को जिस से उन को रोका गया था और वो सरगोशी करते हैं

بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ ۫ وَاِذَا جَآءُوْكَ

गुनाह की और जुल्म की और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नाफरमानी की। और जब वो आप के पास आते हैं तो

حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللّٰهُ ۙ وَيَقُوْلُوْنَ فِىْٓ اَنْفُسِهِمْ

आप को दुआ देते हैं उन अल्फाज़ से जो अल्लाह ने आप को दुआ देने के लिए मखसूस नहीं फरमाए। और वो केहते हैं अपने दिलों में

لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللّٰهُ بِمَا نَقُوْلُ ؕ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ

के अल्लाह हमें अज़ाब क्यूं नहीं देता उन बातों की वजह से जो हम केह रहे हैं। उन के लिए जहन्नम काफी है, जिस में वो

فَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝٨ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا تَنَاجَيْتُمْ

दाखिल होंगे। फिर वो बुरी जगह है। ऐ ईमान वालो! जब तुम आपस में सरगोशी करो

فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ

तो सरगोशी मत करो गुनाह की और जुल्म की और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नाफरमानी की,

وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ

बल्के सरगोशी करो नेकी की और तक़्वे की। और अल्लाह से डरो, उस अल्लाह से जिस की तरफ

تُحْشَرُوْنَ ۝٩ اِنَّمَا النَّجْوٰى مِنَ الشَّيْطٰنِ لِيَحْزُنَ

तुम इकठ्ठे किए जाओगे। सरगोशी तो सिर्फ शैतान की तरफ से है ताके वो ग़मगीन करे

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيْسَ بِضَآرِّهِمْ شَيْـًٔا اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ

ईमान वालों को हालांके वो उन को ज़रा भी ज़रर नहीं पहोंचा सकता मगर अल्लाह के हुक्म से।

وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝١٠ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا

और अल्लाह ही पर ईमान वालों को तवक्कुल करना चाहिए। ऐ ईमान वालो!

اِذَا قِيْلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوْا فِى الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا يَفْسَحِ

जब तुम से कहा जाए के मजलिस में खुल कर बैठो तो कुशादगी किया करो, अल्लाह तुम्हारे लिए

اللّٰهُ لَكُمْ ۚ وَاِذَا قِيْلَ انْشُزُوْا فَانْشُزُوْا يَرْفَعِ اللّٰهُ

कुशादगी करेगा। और जब कहा जाए के उठ जाओ तब उठ जाओ, तो अल्लाह तुम में से

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ؕ

ईमान वालों के और उन के दरजात बुलन्द करेगा जिन को इल्म दिया गया।

وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝١١ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا

और अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाखबर हैं। ऐ ईमान वालो!

اِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُوْلَ فَقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَىْ نَجْوٰىكُمْ

जब तुम रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से सरगोशी करो, तो अपनी सरगोशी से पेहले कुछ सदक़ा

صَدَقَةً ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَاَطْهَرُ ؕ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا

कर लो। ये तुम्हारे लिए बेहतर है और ज़्यादा पाकीज़गी वाला है। फिर अगर तुम (सदक़ा) न पाओ

فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢﴾ ءَاَشْفَقْتُمْ اَنْ تُقَدِّمُوْا بَيْنَ

तो यक़ीनन अल्लाह बख़्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। क्या तुम इस से डर गए के अपनी सरगोशी से

يَدَىْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقٰتٍ ؕ فَاِذْ لَمْ تَفْعَلُوْا وَتَابَ اللّٰهُ

पेहले सदक़ा कर दिया करो? फिर जब तुम ने ऐसा नहीं किया और अल्लाह ने तुम्हें मुआफ

عَلَيْكُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ

कर दिया तो नमाज़ क़ाइम करो और ज़कात दो और अल्लाह और उस के रसूल का केहना

وَرَسُوْلَهٗ ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٣﴾ اَلَمْ ع ٢

मानो। और अल्लाह बाखबर है उन कामों से जो तुम करते हो। क्या आप ने देखा नहीं उन लोगों

تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ؕ مَا هُمْ مِّنْكُمْ

की तरफ जिन्हों ने दोस्ती की ऐसी क़ौम से जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब है? वो तुम में से नहीं हैं

وَلَا مِنْهُمْ ۙ وَيَحْلِفُوْنَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٤﴾

और न उन में से हैं और वो झूठी बात पर क़सम खाते हैं हालांके वो जानते हैं।

اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا

अल्लाह ने उन के लिए दर्दनाक अज़ाब तय्यार कर रखा है। यक़ीनन बुरे हैं वो काम जो वो कर

يَعْمَلُوْنَ ﴿١٥﴾ اِتَّخَذُوْٓا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا

रहे हैं। उन्हों ने अपनी क़स्मों को ढाल बना लिया है, फिर उन्हों ने अल्लाह के रास्ते

عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿١٦﴾ لَنْ تُغْنِىَ

से रोका, फिर उन के लिए रुस्वा करने वाला अज़ाब है। हरगिज़ उन के कुछ काम नहीं

عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ

आएंगे उन के माल और न उन की औलाद अल्लाह से ज़रा भी।

اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ؕ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿١٧﴾ يَوْمَ

ये दोज़ख़ी हैं। वो उस में हमेशा रहेंगे। जिस दिन

يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيَحْلِفُوْنَ لَهٗ كَمَا يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ

अल्लाह उन तमाम को क़ब्रों से उठाएगा, फिर वो अल्लाह के सामने क़स्में खाएंगे जैसा के वो तुम्हारे सामने

وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ عَلٰى شَىْءٍ ؕ اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ﴿١٨﴾

क़स्में खाते थे और वो समझते हैं के वो (अच्छे) काम पर हैं। सुनो! यक़ीनन वो झूठे हैं।

اِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطٰنُ فَاَنْسٰىهُمْ ذِكْرَ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ

शैतान उन पर ग़ालिब आ गया है, फिर शैतान ने अल्लाह का ज़िक्र उन से भुला दिया है। ये शैतान का

الشَّيْطٰنِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ حِزْبَ الشَّيْطٰنِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٩﴾

गिरोह है। सुनो! यक़ीनन शैतान का गिरोह वही खसारा उठाने वाला है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗۤ اُولٰٓئِكَ فِى الْاَذَلِّيْنَ ﴿٢٠﴾

यक़ीनन वो लोग जो अल्लाह और उस के रसूल से मुखालफत रखते हैं ये सब से ज़्यादा ज़लील लोगों में हैं।

كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِىْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِىٌّ عَزِيْزٌ ﴿٢١﴾

अल्लाह ने लिख दिया है के मैं और मेरे पैग़म्बर ही ज़रूर ग़ालिब रहेंगे। यक़ीनन अल्लाह क़ूव्वत वाला, ज़बर्दस्त है।

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ يُوَآدُّوْنَ

आप नहीं पाओगे ऐसी क़ौम को जो ईमान रखती है अल्लाह पर और आखिरी दिन पर के वो दोस्ती रखते हों

مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَوْ كَانُوْۤا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ

उन से जो अल्लाह और उस के रसूल के मुखालिफ हैं, अगर्चे वो उन के बाप दादा या उन के बेटे

اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِيْرَتَهُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ كَتَبَ فِىْ قُلُوْبِهِمُ

या उन के भाई या उन का खानदान ही क्यूं न हो। ये वो लोग हैं के जिन के दिलों में अल्लाह ने ईमान लिख

الْاِيْمَانَ وَاَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ؕ وَيُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ

दिया है और अपनी तरफ से रूह के ज़रिए उन की ताईद की है। और अल्लाह उन्हें जन्नतों में दाखिल करेगा,

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا

जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी, जिन में वो हमेशा रहेंगे। अल्लाह उन से राज़ी हुवा और वो अल्लाह से

ع ٣ عَنْهُ ؕ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ اللّٰهِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٢٢﴾

राज़ी हो गए। ये अल्लाह का गिरोह है। सुनो! यक़ीनन अल्लाह का गिरोह ही फ़लाह पाने वाला है।

اٰيَاتُهَا ٢٤   (٥٩) سُوْرَةُ الْحَشْرِ مَدَنِيَّةٌ (١٠١)   رُكُوْعَاتُهَا ٣

उस में २४ आयतें हैं   सूरह हश्र मदीना में नाज़िल हुई   और ३ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ

अल्लाह के लिए तस्बीह करती हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं। और वो

الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝١ هُوَ الَّذِيْٓ اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। वही है जिस ने एहले किताब में से काफिरों को उन के

مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِاَوَّلِ الْحَشْرِ ؕ مَا ظَنَنْتُمْ

घरों से पेहली बार इकट्ठे करने के वक्त बाहर निकाला। तुम ने गुमान नहीं किया था

اَنْ يَّخْرُجُوْا وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَاَتٰىهُمُ

के वो निकलेंगे और वो भी गुमान कर रहे थे के उन को उन के क़िल्अे अल्लाह से बचाने वाले हैं, फिर अल्लाह

اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ

उन के पास आया ऐसी जगह से जिस का उन्हों ने गुमान भी नहीं किया था और अल्लाह ने उन के दिलों में रौब

الرُّعْبَ يُخْرِبُوْنَ بُيُوْتَهُمْ بِاَيْدِيْهِمْ وَاَيْدِي الْمُؤْمِنِيْنَ ۗ

डाल दिया के वो अपने घरों को अपने हाथों से और ईमान वालों के हाथों से उजाड़ने लगे।

فَاعْتَبِرُوْا يٰٓاُولِي الْاَبْصَارِ ۝٢ وَلَوْلَآ اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمُ

तो ऐ बसीरत वालो! इबरत पकड़ो। और अगर अल्लाह ने उन पर जिलावतनी न लिख दी

الْجَلَآءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا ؕ وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابُ

होती तो अल्लाह उन को दुन्या में अज़ाब देता। और उन के लिए आखिरत में आग का

النَّارِ ۝٣ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ

अज़ाब है। ये इस वजह से के उन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल की मुखालफत की। और जो भी

يُّشَآقِّ اللّٰهَ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝٤ مَا قَطَعْتُمْ

अल्लाह की मुखालफत करेगा तो यक़ीनन अल्लाह सख्त सज़ा देने वाला है। जो खजूर का

مِّنْ لِّيْنَةٍ اَوْ تَرَكْتُمُوْهَا قَآئِمَةً عَلٰٓى اُصُوْلِهَا فَبِاِذْنِ

दरख्त तुम ने काटा या उस को अपनी जड़ों पर खड़ा छोड़ दिया तो वो अल्लाह के हुक्म से

اللّٰهِ وَلِيُخْزِيَ الْفٰسِقِيْنَ ۝٥ وَمَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ

था और इस लिए ताके अल्लाह नाफरमानों को रुस्वा करे। और जो अल्लाह ने अपने रसूल पर उन लोगों से

مِنْهُمْ فَمَآ اَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّلَا رِكَابٍ

(फेअ बना कर) लौटाया, फिर तुम ने उस पर घोड़े और ऊँट नहीं दौड़ाए थे,

وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ

लेकिन अल्लाह मुसल्लत करता है अपने पैग़म्बरों को जिस पर चाहता है। और अल्लाह हर चीज़ पर

وَقْفُ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ

شَيۡءٍ قَدِيۡرٌ ﴿٦﴾ مَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوۡلِهٖ مِنۡ اَهۡلِ

कुदरत वाला है। जो अल्लाह ने अपने रसूल पर माले फैअ लौटाया उन बस्तियों वालों की

الۡقُرٰى فَلِلّٰهِ وَلِلرَّسُوۡلِ وَلِذِى الۡقُرۡبٰى وَالۡيَتٰمٰى

तरफ से, तो वो अल्लाह का है और रसूल का है और रिश्तेदारों और यतीमों

وَالۡمَسٰكِيۡنِ وَابۡنِ السَّبِيۡلِ ۙ كَىۡ لَا يَكُوۡنَ دُوۡلَةًۢ بَيۡنَ

और मिस्कीनों और मुसाफिर का है। ताके ये तुम में से मालदारों के दरमियान घूमने वाली

الۡاَغۡنِيَآءِ مِنۡكُمۡ ؕ وَمَاۤ اٰتٰٮكُمُ الرَّسُوۡلُ فَخُذُوۡهُ ۚ

जाएदाद बन कर न रेह जाए। और रसूल तुम्हें जो दे उस को ले लो।

وَمَا نَهٰٮكُمۡ عَنۡهُ فَانۡتَهُوۡا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيۡدُ

और जिस से तुम्हें रोके उस से रुक जाओ। और अल्लाह से डरो। यक़ीनन अल्लाह सख्त सज़ा

وقف لازم الۡعِقَابِ ۘ﴿٧﴾ لِلۡفُقَرَآءِ الۡمُهٰجِرِيۡنَ الَّذِيۡنَ اُخۡرِجُوۡا

देने वाला है। उन फुक़रा के लिए (माले फैअ) है जिन्हों ने हिजरत की, जो अपने घरों से

مِنۡ دِيَارِهِمۡ وَاَمۡوَالِهِمۡ يَبۡتَغُوۡنَ فَضۡلًا مِّنَ اللّٰهِ

और अपने मालों से निकाल दिए गए हैं, जो अल्लाह का फ़ज़्ल और अल्लाह की खुशनूदी तलब

وَرِضۡوَانًا وَّيَنۡصُرُوۡنَ اللّٰهَ وَرَسُوۡلَهٗ ؕ اُولٰٓٮِٕكَ هُمُ

करते हैं और जो अल्लाह और उस के रसूल की नुसरत करते हैं। यही लोग

الصّٰدِقُوۡنَ ۚ﴿٨﴾ وَالَّذِيۡنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَالۡاِيۡمَانَ

सच्चे हैं। और उन के लिए (माले फैअ) है जो मदीना में मुक़ीम थे ईमान के साथ

مِنۡ قَبۡلِهِمۡ يُحِبُّوۡنَ مَنۡ هَاجَرَ اِلَيۡهِمۡ وَلَا يَجِدُوۡنَ

मुहाजिरीन के आने से पेहले, जो महब्बत करते हैं उस से जो हिजरत कर के आए उन की तरफ और अपने दिलों में

فِىۡ صُدُوۡرِهِمۡ حَاجَةً مِّمَّاۤ اُوۡتُوۡا وَيُؤۡثِرُوۡنَ

कोई तंगी नहीं पाते उस की तरफ से जो उन्हें (मुहाजिरीन को) दिया जाए, और वो अपने आप पर मुहाजिरीन को

عَلٰٓى اَنۡفُسِهِمۡ وَلَوۡ كَانَ بِهِمۡ خَصَاصَةٌ ۛؕ وَمَنۡ يُّوۡقَ شُحَّ

तरजीह देते हैं अगर्चे खुद उन के साथ फाक़ा ही क्यूं न हो। और जिसे अपने नफ्स के बुख्ल से

نَفۡسِهٖ فَاُولٰٓٮِٕكَ هُمُ الۡمُفۡلِحُوۡنَ ۚ﴿٩﴾ وَالَّذِيۡنَ جَآءُوۡ

बचा लिया गया तो यही लोग फलाह पाने वाले हैं। और जो उन के

مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا

बाद आए, वो केहते हैं के ऐ हमारे रब! मग़फिरत कर दे हमारी और हमारे भाइयों की,

الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا

उन की जिन्हों ने ईमान में हम से सबक़त की है और हमारे दिलों में ईमान वालों

غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَآ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٠﴾ ع

के लिए कीना मत रख, ऐ हमारे रब! यक़ीनन तू बहोत ज़्यादा शफक़त वाला, निहायत महरबान है।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نَافَقُوْا يَقُوْلُوْنَ لِاِخْوَانِهِمُ الَّذِيْنَ

क्या आप ने नहीं देखा मुनाफिक़ीन को जो एहले किताब में से

كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَئِنْ اُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ

अपने काफिर भाइयों से केहते हैं के अगर तुम निकाले गए तो हम भी तुम्हारे साथ निकल

مَعَكُمْ وَلَا نُطِيْعُ فِيْكُمْ اَحَدًا اَبَدًا ۙ وَّاِنْ قُوْتِلْتُمْ

जाएंगे, और हम तुम्हारे बारे में किसी की बात कभी नहीं मानेंगे। और अगर तुम से क़िताल किया गया, तो हम

لَنَنْصُرَنَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١١﴾

तुम्हारी ज़रूर नुसरत करेंगे। हालांके अल्लाह गवाही देता है के ये बिल्कुल झूठे हैं।

لَئِنْ اُخْرِجُوْا لَا يَخْرُجُوْنَ مَعَهُمْ ۚ وَلَئِنْ قُوْتِلُوْا

अगर वो निकाले गए तो ये उन के साथ नहीं निकलेंगे। और अगर उन से क़िताल किया गया तो उन की नुसरत

لَا يَنْصُرُوْنَهُمْ ۚ وَلَئِنْ نَّصَرُوْهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْاَدْبَارَ ۫

नहीं करेंगे। और अगर वो उन की नुसरत करेंगे भी, तो वो ज़रूर पीठ फेर कर भागेंगे।

ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿١٢﴾ لَاَنْتُمْ اَشَدُّ رَهْبَةً فِيْ صُدُوْرِهِمْ

फिर उन की नुसरत नहीं की जाएगी। अलबत्ता तुम्हारा खौफ उन के दिलों में अल्लाह से भी

مِّنَ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿١٣﴾

ज़्यादा है। ये इस वजह से के ये ऐसी क़ौम है जो कुछ समझती नहीं।

لَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ جَمِيْعًا اِلَّا فِيْ قُرًى مُّحَصَّنَةٍ

वो सब इकठ्ठे हो कर भी तुम से क़िताल नहीं कर सकते मगर क़िल्आबन्द बस्तियों में

اَوْ مِنْ وَّرَآءِ جُدُرٍ ؕ بَاْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيْدٌ ؕ تَحْسَبُهُمْ جَمِيْعًا

या दीवारों की ओट से। उन की लड़ाई आपस में बड़ी सख्त है। आप उन्हें इकठ्ठे गुमान करते हैं

وَّقُلُوْبُهُمْ شَتّٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ۚ﴿١٤﴾

हालांके उन के दिल अलग अलग हैं। ये इस वजह से के ये ऐसी क़ौम है जो अक़्ल नहीं रखती।

كَمَثَلِ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيْبًا ذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ ۚ

इन का हाल उन के हाल की तरह है जो उन से पेहले अभी गुज़रे हैं जिन्हों ने अपनी हरकत का वबाल चख लिया।

وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۚ﴿١٥﴾ كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ

और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। उन का हाल उस शैतान के हाल की तरह है जब वो इन्सान से केहता

لِلْاِنْسَانِ اكْفُرْ ۚ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكَ اِنِّيْٓ

है के तू काफिर बन जा। जब वो कुफ्र कर लेता है, तो शैतान केहता है के मैं तुझ से बरी हूँ के मैं

اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾ فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَآ اَنَّهُمَا

अल्लाह रब्बुल आलमीन से डरता हूँ। फिर दोनों का अन्जाम ये होगा के वो दोनों

فِي النَّارِ خٰلِدَيْنِ فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ۚ﴿١٧﴾ ع ٢ ٥

आग में होंगे, उस में वो हमेशा रहेंगे। और ये ज़ालिमों की सज़ा है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ

ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और चाहिए के हर शख्स देख ले वो

مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌ

जो उस ने कल के लिए आगे किया भेजा है। और अल्लाह से डरो। यक़ीनन अल्लाह बाखबर है उन कामों से

بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰىهُمْ

जो तुम करते हो। और उन लोगों की तरह मत बनो जिन्हों ने अल्लाह को भुला दिया, फिर अल्लाह ने खुद उन को

اَنْفُسَهُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿١٩﴾ لَا يَسْتَوِيْٓ

उन की जानों से भुला दिया। यही लोग नाफरमान हैं। दोज़खी और जन्नती

اَصْحٰبُ النَّارِ وَاَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ؕ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ

बराबर नहीं हो सकते। जन्नती ही कामयाब

الْفَآئِزُوْنَ ﴿٢٠﴾ لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ

होने वाले हैं। अगर हम इस कुरआन को उतारते पहाड़ पर

لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ

तो आप उसे ज़रूर आजिज़ी करने वाला, अल्लाह के खौफ की वजह से फटने वाला देखते।

وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ

और ये मिसालें हैं जो हम इन्सानों के लिए बयान करते हैं ताके वो

يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ

सोचें। वही अल्लाह वो है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं।

عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿٢٢﴾

वो ज़ाहिर और छुपी हुई चीज़ों को जानने वाला है। वो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ

वही अल्लाह है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं। वो बादशाह है, सब ऐबों से पाक है,

السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ

सलामती वाला है, अमन देने वाला है, निगेहबान है, ज़बर्दस्त है, कूव्वत वाला है, बड़ाई वाला है।

سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٢٣﴾ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ

अल्लाह उन के शरीक ठेहराने से पाक है। वही अल्लाह है जो खिल्क़त को बनाने वाला,

الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ؕ يُسَبِّحُ لَهٗ

पैदा करने वाला, सूरतें बनाने वाला है, उस के लिए अच्छे अच्छे नाम हैं। उस की तस्बीह पढ़ती हैं वो

مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٤﴾ ع ٣ ٦

तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं। और वो ज़बर्दस्त है, हिकमत वाला है।

سُوْرَةُ الْمُمْتَحِنَةِ مَدَنِيَّةٌ (٩١) (٦٠)

اٰيَاتُهَا ١٣ رُكُوْعَاتُهَا ٢

उस में १३ आयतें हैं और २ रूकूअ हैं सूरह मुमतहिना मदीना में नाज़िल हुई

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّىْ وَ عَدُوَّكُمْ

ऐ ईमान वालो! मेरे और अपने दुशमन को दोस्त मत

اَوْلِيَآءَ تُلْقُوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوْا

बनाओ, तुम उन को दोस्ती से पैग़ाम भेजते हो हालांके उन्हों ने कुफ्र किया

بِمَا جَآءَكُمْ مِّنَ الْحَقِّ ۚ يُخْرِجُوْنَ الرَّسُوْلَ وَاِيَّاكُمْ

उस हक़ के साथ जो तुम्हारे पास आया। वो रसूल को और तुम्हें भी निकालते हैं

اَنْ تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ رَبِّكُمْ ؕ اِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا
इस वजह से के तुम अपने रब अल्लाह पर ईमान रखते हो। अगर तुम मेरे रास्ते में और मेरी रज़ा

فِیْ سَبِیْلِیْ وَابْتِغَآءَ مَرْضَاتِیْ تُسِرُّوْنَ اِلَیْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ ۖۗ
की तलब में जिहाद के लिए निकले हो, फिर तुम उन की तरफ चुपके चुपके महब्बत का पैग़ाम भेजते हो।

وَاَنَا اَعْلَمُ بِمَآ اَخْفَیْتُمْ وَمَآ اَعْلَنْتُمْ ؕ وَمَنْ یَّفْعَلْهُ
हालांके मैं खूब जानता हूँ उस को जो तुम ने छुपाया और जो ज़ाहिर किया। और जो तुम में से ऐसा

مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِیْلِ ۝١ اِنْ یَّثْقَفُوْكُمْ
करेगा तो यक़ीनन वो सीधे रास्ते से गुमराह हो गया। अगर वो तुम पर क़ुदरत पा लें

یَكُوْنُوْا لَكُمْ اَعْدَآءً وَّیَبْسُطُوْٓا اِلَیْكُمْ اَیْدِیَهُمْ
तो वो तुम्हारे दुश्मन बन जाएं और तुम्हारी तरफ अपने हाथ और अपनी ज़बानें

وَاَلْسِنَتَهُمْ بِالسُّوْٓءِ وَوَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ ۝٢ؕ لَنْ تَنْفَعَكُمْ
बुराई के साथ चलाएं और वो तो चाहते हैं के तुम काफिर बन जाओ। हरगिज़ तुम्हें नफा देगी

اَرْحَامُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ ۚۛ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ ۚۛ یَفْصِلُ بَیْنَكُمْ ؕ
तुम्हारी रिश्तेदारियाँ और न तुम्हारी औलाद क़यामत के दिन। वो तुम्हारे दरमियान फैसला करेगा।

معانقة ١٢ السجاع الوقف على القيامة ١٢ عند المتأخرين ١٢

وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِیْرٌ ۝٣ قَدْ كَانَتْ لَكُمْ اُسْوَةٌ
और अल्लाह तुम्हारे आमाल देख रहे हैं। तुम्हारे लिए इब्राहीम (अलैहिससलातु वस्सलाम)

حَسَنَةٌ فِیْٓ اِبْرٰهِیْمَ وَالَّذِیْنَ مَعَهٗ ۚ اِذْ قَالُوْا
में और उन में जो उन के साथ थे अच्छा नमूना है। जब उन्हों ने अपनी

لِقَوْمِهِمْ اِنَّا بُرَءٰٓؤُا مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُوْنَ
क़ौम से कहा के हम तुम से बरी हैं और उन से भी बरी हैं जिन की तुम अल्लाह के

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ز كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَیْنَنَا وَبَیْنَكُمُ
सिवा इबादत करते हो। हम ने तुम्हारे साथ कुफ्र किया और हमारे और तुम्हारे दरमियान अदावत

الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَآءُ اَبَدًا حَتّٰی تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗٓ
और बुग्ज़ हमेशा के लिए ज़ाहिर हो गया जब तक के तुम यकता अल्लाह पर ईमान न लाओ,

اِلَّا قَوْلَ اِبْرٰهِیْمَ لِاَبِیْهِ لَاَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَآ
मगर इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का फरमान अपने अब्बा से के मैं ज़रूर तेरे लिए इस्तिग़फार करूँगा, और

اَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا

मैं तेरे लिए अल्लाह से किसी भी चीज़ का इख्तियार नहीं रखता। ऐ हमारे रब! हम ने तुझ ही पर

وَاِلَيْكَ اَنَبْنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ۝٤ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا

तवक्कुल किया और तेरी ही तरफ तौबा करते हैं और तेरी ही तरफ लौटना है। ऐ हमारे रब! हमें काफिरों का

فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ

तख्तए मश्क़ न बना और हमारी मग़फिरत कर दे, ऐ हमारे रब! यक़ीनन तू

الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٥ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْهِمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ

ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। यक़ीनन तुम्हारे लिए उन में अच्छा नमूना है

لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّ

उस शख्स के लिए जो उम्मीद रखता हो अल्लाह की और आखिरी दिन की। और जो रूगरदानी करेगा

فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝٦ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّجْعَلَ ع

तो यक़ीनन अल्लाह वो बेनियाज़ है, क़ाबिले तारीफ है। उम्मीद है के अल्लाह तुम्हारे

بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ عَادَيْتُمْ مِّنْهُمْ مَّوَدَّةً ؕ وَاللّٰهُ

और उन के दरमियान जिन से तुम्हें अदावत है, महब्बत पैदा कर दे। और अल्लाह

قَدِيْرٌ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٧ لَا يَنْهٰكُمُ اللّٰهُ

कुदरत वाला है। और अल्लाह बहोत ज़्यादा बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। अल्लाह तुम्हें नहीं रोकता

عَنِ الَّذِيْنَ لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ فِى الدِّيْنِ وَلَمْ يُخْرِجُوْكُمْ

उन से जिन्हों ने तुम से दीन में क़िताल नहीं किया और तुम्हें अपने

مِّنْ دِيَارِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْهُمْ وَتُقْسِطُوْٓا اِلَيْهِمْ ؕ

घरों से नहीं निकाला, (इस से नहीं रोकता) के तुम उन के साथ एहसान करो और तुम उन के साथ इन्साफ करो।

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝٨ اِنَّمَا يَنْهٰكُمُ اللّٰهُ

यक़ीनन अल्लाह इन्साफ करने वालों से महब्बत करते हैं। अल्लाह तुम्हें सिर्फ रोकते हैं उन

عَنِ الَّذِيْنَ قٰتَلُوْكُمْ فِى الدِّيْنِ وَاَخْرَجُوْكُمْ

से जिन्हों ने तुम से दीन में क़िताल किया और तुम्हें अपने घरों से

مِّنْ دِيَارِكُمْ وَ ظٰهَرُوْا عَلٰٓى اِخْرَاجِكُمْ اَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ

निकाला और तुम्हारे निकालने पर दूसरों की मदद की, (रोकता है इस से) के तुम उन से दोस्ती करो।

وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ۝ يٰٓاَيُّهَا

और जो उन से दोस्ती रखेगा तो यही लोग ज़ालिम हैं। ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا جَآءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ

ईमान वालो! जब तुम्हारे पास मोमिन औरतें हिजरत कर के आएं,

فَامْتَحِنُوْهُنَّ ؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِهِنَّ ۚ فَاِنْ عَلِمْتُمُوْهُنَّ

तो उन का इम्तिहान ले लो। अल्लाह उन के ईमान को खूब जानता है। फिर अगर तुम उन को मोमिन

مُؤْمِنٰتٍ فَلَا تَرْجِعُوْهُنَّ اِلَى الْكُفَّارِ ؕ لَا هُنَّ حِلٌّ

जान लो तो उन को काफिरों की तरफ वापस मत लौटाओ। न ये मोमिन औरतें उन के लिए हलाल

لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ ؕ وَاٰتُوْهُمْ مَّآ اَنْفَقُوْا ؕ

हैं और न वो उन के लिए हलाल हैं। और काफिरों को दो वो जो उन्हों ने खर्च किया है।

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ

और तुम पर कोई गुनाह नहीं है के तुम उन औरतों से निकाह करो जब उन को उन के महर

اُجُوْرَهُنَّ ؕ وَلَا تُمْسِكُوْا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَسْـَٔلُوْا

दे दो। और काफिर औरतों के नामूस अपने क़ब्ज़े में मत रखो और मांग लो वो जो

مَآ اَنْفَقْتُمْ وَلْيَسْـَٔلُوْا مَآ اَنْفَقُوْا ؕ ذٰلِكُمْ حُكْمُ اللّٰهِ ؕ

तुम ने खर्च किया है और उन्हें भी चाहिए के वो मांग लें जो उन्हों ने खर्च किया है। ये अल्लाह का हुक्म है।

يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ۝ وَاِنْ فَاتَكُمْ

अल्लाह तुम्हारे दरमियान फैसला करता है। और अल्लाह इल्म वाला, हिक्मत वाला है। और अगर तुम्हारी

شَيْءٌ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ اِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَاٰتُوا

बीवियों में से कोई बीवी काफिरों की तरफ चली जाए, फिर तुम सज़ा दो, तो दे दो

الَّذِيْنَ ذَهَبَتْ اَزْوَاجُهُمْ مِّثْلَ مَآ اَنْفَقُوْا ؕ وَاتَّقُوا

उन को जिन की बीवियाँ चली गई हैं उस के मानिन्द जो उन मुसलमान शौहरों ने खर्च किया था। और अल्लाह से

اللّٰهَ الَّذِيْٓ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ

डरो जिस पर तुम ईमान रखते हो। ऐ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)!

اِذَا جَآءَكَ الْمُؤْمِنٰتُ يُبَايِعْنَكَ عَلٰٓى اَنْ لَّا يُشْرِكْنَ

जब आप के पास मोमिन औरतें आएं के आप से बैअत करें इस पर के वो अल्लाह के साथ शरीक नहीं

بِاللّٰهِ شَيْئًا وَّلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِيْنَ وَلَا يَقْتُلْنَ

ठेहराएंगी किसी चीज़ को और चोरी नहीं करेंगी और ज़िना नहीं करेंगी और अपनी औलाद को क़त्ल नहीं

اَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَاْتِيْنَ بِبُهْتَانٍ يَّفْتَرِيْنَهٗ بَيْنَ اَيْدِيْهِنَّ

करेंगी और बुहतान नहीं बांधेंगी जिस को वो घड़ें अपने हाथों और पैरों

وَاَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيْنَكَ فِيْ مَعْرُوْفٍ فَبَايِعْهُنَّ

के सामने और आप की किसी नेक काम में नाफरमानी नहीं करेंगी, तो आप उन को बैअत फरमा लीजिए

وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢﴾ يٰۤاَيُّهَا

और उन के लिए अल्लाह से इस्तिग़फार कीजिए। यक़ीनन अल्लाह बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَئِسُوْا

ईमान वालो! दोस्ती मत रखो उस क़ौम से जिन पर अल्लाह का गज़ब है जो आखिरत से

مِنَ الْاٰخِرَةِ كَمَا يَئِسَ الْكُفَّارُ مِنْ اَصْحٰبِ الْقُبُوْرِ ﴿١٣﴾ ع

मायूस हो चुके हैं जिस तरह के काफिर क़ब्र वालों से मायूस हो चुके हैं।

اٰيَاتُهَا ١٤ (٦١) سُوْرَةُ الصَّفِّ مَدَنِيَّةٌ (١٠٩) رُكُوْعَاتُهَا ٢

उस में १४ आयतें हैं सूरह सफ मदीना में नाज़िल हुई और २ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ

अल्लाह की तस्बीह पढ़ती हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं। और वो ज़बर्दस्त है,

الْحَكِيْمُ ﴿١﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ

हिक्मत वाला है। ऐ ईमान वालो! क्यूं केहते हो वो बातें जो तुम खुद

مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٢﴾ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا

करते नहीं? अल्लाह के नज़दीक बेज़ारी के ऐतेबार से बहोत बड़ी है ये बात के तुम कहो

مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ

वो जो तुम करो नहीं। यक़ीनन अल्लाह दोस्त रखते हैं उन को जो क़िताल करते हैं

فِيْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ ﴿٤﴾ وَاِذْ

अल्लाह के रास्ते में सफ बांध कर गोया के वो सीसा पिलाई हुई दीवार हैं। और जब

قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِيْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ

मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपनी क़ौम से फरमाया ऐ मेरी क़ौम! मुझे क्यूं ईज़ा देते हो हालांके तुम जानते हो के

اَنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ ؕ فَلَمَّا زَاغُوْٓا اَزَاغَ اللّٰهُ

मैं अल्लाह का तुम्हारी तरफ भेजा हुवा पैग़म्बर हूँ। फिर जब वो टेढ़े चले तो अल्लाह ने उन के दिल टेढ़े

قُلُوْبَهُمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝٥

कर दिए। और अल्लाह नाफरमान क़ौम को हिदायत नहीं देते।

وَاِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّيْ رَسُوْلُ

और जब के ईसा इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम) ने कहा ऐ बनी इस्राईल! मैं तुम्हारी तरफ अल्लाह

اللّٰهِ اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ

का भेजा हुवा पैग़म्बर हूँ उस तौरात को सच्चा बतलाने वाला हूँ जो मुझ से पेहले थी

وَ مُبَشِّرًا ۢ بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِي اسْمُهٗٓ اَحْمَدُ ؕ

और मैं उस रसूल की बशारत देता हूँ जो मेरे बाद आएंगे जिन का नाम अहमद होगा।

فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٦ وَمَنْ

फिर जब वो उन के पास रोशन मोअजिज़ात ले कर आए तो उन्हों ने कहा के ये तो खुला जादू है। और उस

اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعٰٓى

से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ घड़े जब के उसे इस्लाम की

اِلَى الْاِسْلَامِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٧

तरफ दावत दी जा रही हो? और अल्लाह ज़ालिम क़ौम को हिदायत नहीं देते।

يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ

वो ये चाहते हैं के वो अल्लाह के नूर को अपने मुंह से बुझा दें। और अल्लाह

مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝٨ هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ

अपने नूर को इत्माम तक पहोंचाने वाला है अगर्चे काफिर नापसन्द करें। वही अल्लाह है जिस ने अपना

رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ

रसूल हिदायत और दीने हक़ दे कर भेजा ताके वो उसे ग़ालिब कर दे

عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۝٩ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ ع ٢

तमाम अदयान पर अगर्चे मुशरिक बुरा मानें। ऐ ईमान

اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ

वालो! क्या मैं तुम्हें ऐसी तिजारत बतलाऊँ जो तुम को नजात दे दर्दनाक अज़ाब

اَلِيْمٍ ﴿١٠﴾ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ تُجَاهِدُوْنَ

से? ईमान लाओ अल्लाह पर और उस के पैग़म्बर पर और तुम

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ

अल्लाह के रास्ते में अपने मालों और अपनी जानों के ज़रिए जिहाद करो। ये तुम्हारे लिए बेहतर

لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١١﴾ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ

है अगर तुम्हें समझ है। तो वो तुम्हारे लिए तुम्हारे गुनाह बख्श देगा

وَيُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ

और वो तुम्हें ऐसी जन्नतों में दाखिल करेगा जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी

وَ مَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ

और उम्दा रेहने के मकानात में (दाखिल करेगा) जन्नाते अद्न में। ये बड़ी

الْعَظِيْمُ ﴿١٢﴾ وَاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا ؕ نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ

कामयाबी है। और एक दूसरी नेअमत मिलेगी जो तुम्हें पसन्द है। वो अल्लाह की तरफ से नुसरत और क़रीबी

قَرِيْبٌ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٣﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

फ़तह है। और ईमान वालों को बशारत सुना दीजिए। ऐ ईमान वालो!

كُوْنُوْۤا اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ

अल्लाह के मददगार बन जाओ जैसा के ईसा इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम) ने हवारीयीन से

لِلْحَوَارِيّٖنَ مَنْ اَنْصَارِيْۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ

फरमाया था के कौन हैं मेरे मददगार अल्लाह की तरफ? हवारीयीन ने कहा के

نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ فَاٰمَنَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْۢ بَنِيْۤ

हम अल्लाह के मददगार हैं। फिर बनी इस्राईल की एक जमाअत ईमान

اِسْرَآءِيْلَ وَكَفَرَتْ طَّآئِفَةٌ ۚ فَاَيَّدْنَا الَّذِيْنَ

लाई और एक जमाअत ने कुफ्र किया। तो हम ने ईमान वालों को

اٰمَنُوْا عَلٰى عَدُوِّهِمْ فَاَصْبَحُوْا ظٰهِرِيْنَ ﴿١٤﴾ ع

उन के दुशमन के खिलाफ कूव्वत दी, पस वो ग़ालिब रहे।

اٰیَاتُهَا ١١ (٦٢) سُوْرَةُ الْجُمُعَةِ مَدَنِيَّةٌ (١١٠) رُكُوْعَاتُهَا ٢

उस में ११ आयतें हैं सूरह जुमुआ मदीना में नाज़िल हुई और २ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ الْمَلِكِ

अल्लाह की तस्बीह करती हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में और ज़मीन में हैं, उस अल्लाह की जो बादशाह है,

الْقُدُّوْسِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝١ هُوَ الَّذِيْ بَعَثَ

तमाम उयूब से पाक है, ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। वही अल्लाह है जिस ने उम्मियों में उन्ही

فِي الْاُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ

में से एक पैग़म्बर भेजा जो उन पर अल्लाह की आयतें तिलावत करते हैं और उन का तज़किया करते हैं

وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۗ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ

और उन्हें किताब और हिक्मत की तालीम देते हैं। और यक़ीनन वो इस से पेहले

لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝٢ وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ؕ

खुली गुमराही में थे। और उन में से दूसरों की तरफ भी भेजा है जो अभी उन से मिले नहीं।

وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٣ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ

और वो ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। ये अल्लाह का फ़ज़्ल है, उसे देता है

مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝٤ مَثَلُ

जिसे चाहता है। और अल्लाह भारी फ़ज़्ल वाला है। उन लोगों का

الَّذِيْنَ حُمِّلُوا التَّوْرٰىةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوْهَا كَمَثَلِ

हाल जिन पर तौरात लादी गई, फिर उन्हों ने उस को नहीं उठाया उस गधे की

الْحِمَارِ يَحْمِلُ اَسْفَارًا ؕ بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ

तरह है जो दफतरों को उठाए हुए हो। बुरी है उस क़ौम की मिसाल जिस ने

كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٥

अल्लाह की आयतों को झुठलाया। और अल्लाह ज़ालिम क़ौम को हिदायत नहीं देते।

قُلْ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ هَادُوْۤا اِنْ زَعَمْتُمْ اَنَّكُمْ اَوْلِيَآءُ

आप फरमा दीजिए ऐ यहूदियो! अगर तुम्हारा ये दावा है के तुम अल्लाह के दोस्त

لِلّٰهِ مِنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ

हो और इन्सानों को छोड़ कर, तो तुम मौत की तमन्ना करो अगर तुम

صٰدِقِيْنَ ۝٦ وَلَا يَتَمَنَّوْنَهٗٓ اَبَدًۢا بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ؕ

सच्चे हो। और ये लोग कभी भी मौत की तमन्ना नहीं करेंगे उन आमाल की वजह से जो उन के हाथ आगे भेज चुके हैं।

وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝٧ قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِيْ

और अल्लाह ज़ालिमों को खूब जानते हैं। फरमा दीजिए यक़ीनन वो मौत जिस

تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِيْكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ

से तुम भागते हो ज़रूर वो तुम से मिल कर रहेगी, फिर तुम पोशीदा और ज़ाहिर के जानने वाले

الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٨ ع ١١

अल्लाह की जानिब लौटाए जाओगे, फिर वो तुम्हें तुम्हारे आमाल की खबर देगा।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ

ऐ ईमान वालो! जब जुमुआ के दिन नमाज़ की अज़ान दी

الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ؕ

जाए, तो अल्लाह के ज़िक्र की तरफ दौड़ो और खरीद व फरोख्त को छोड़ दो।

ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٩ فَاِذَا قُضِيَتِ

ये तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो। फिर जब नमाज़ खत्म हो

الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ

जाए, तो ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह का फ़ज़्ल तलब

اللّٰهِ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝١٠

करो और अल्लाह को बहोत ज़्यादा याद करो ताके तुम फलाह पाओ

وَاِذَا رَاَوْا تِجَارَةً اَوْ لَهْوَا ِۨانْفَضُّوْٓا اِلَيْهَا وَتَرَكُوْكَ

और जब वो तिजारत या अल्लाह से ग़ाफिल करने वाली कोई चीज़ देखते हैं तो उस की तरफ दौड़ पड़ते हैं और आप को

قَآئِمًا ؕ قُلْ مَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ

खड़ा हुवा छोड़ जाते हैं। आप फरमा दीजिए जो अल्लाह के पास है वो अल्लाह से ग़ाफिल करने वाली चीज़ों से बेहतर है

وَمِنَ التِّجَارَةِ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝١١ ع ٢ ١٢

और तिजारत से बेहतर है। और अल्लाह बेहतरीन रोज़ी देने वाला है।

اٰيَاتُهَا ۱۱ (٦٣) سُوْرَةُ الْمُنٰفِقُوْنَ مَدَنِيَّةٌ (۱۰۴) رُكُوْعَاتُهَا ۲

उस में ११ आयतें हैं सूरह मुनाफ़िकून मदीना में नाज़िल हुई और २ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اِذَا جَآءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُ

जब मुनाफिक़ आप के पास आते हैं तो केहते हैं के हम गवाही देते हैं के यक़ीनन आप अल्लाह के रसूल

اللّٰهِ ۘ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ

وقف لازم

हैं। और अल्लाह जानता है के बेशक आप अल्लाह के रसूल हैं। और अल्लाह गवाही देता है

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ ۚ﴿۱﴾ اِتَّخَذُوْۤا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً

के ये मुनाफिक़ बिल्कुल झूठे हैं। उन्हों ने अपनी क़स्मों को ढाल बना रखा है,

فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا

फिर वो अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं। यक़ीनन बुरे हैं जो काम वो

يَعْمَلُوْنَ ﴿۲﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا فَطُبِعَ

कर रहे हैं। ये इस वजह से के वो ईमान लाए, फिर काफिर बन गए, तो उन के दिलों पर मुहर

عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿۳﴾ وَاِذَا رَاَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ

लगा दी गई, अब वो समझते नहीं। और जब आप उन को देखोगे तो उन के जिस्म आप को

اَجْسَامُهُمْ ؕ وَاِنْ يَّقُوْلُوْا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ ؕ كَاَنَّهُمْ

अच्छे लगेंगे। और अगर वो बोलेंगे तो आप उन की बात सुनोगे। गोया के वो

خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ ؕ يَحْسَبُوْنَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ؕ هُمُ

सहारे से टिकी हुई लकड़ियाँ हैं। वो गुमान करते हैं हर चीख को अपने ऊपर। वही

الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ؕ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۫ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿۴﴾

दुश्मन हैं, इस लिए आप उन से बचते रहिए। अल्लाह उन को मारे। कहाँ वो उलटे फिरे जा रहे हैं?

وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ لَوَّوْا

और जब उन से कहा जाता है के आओ, तुम्हारे लिए अल्लाह के पैग़म्बर मग़फिरत तलब करते हैं, तो वो अपने

رُءُوْسَهُمْ وَرَاَيْتَهُمْ يَصُدُّوْنَ وَهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۵﴾

सर हिलाते हैं और आप उन को देखोगे के वो रूकते हैं और वो तकब्बुर करते हैं।

سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ اَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ اَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ

उन के लिए बराबर है के आप उन के लिए इस्तिग़फार करें या उन के लिए इस्तिग़फार न करें।

لَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ

अल्लाह उन की हरगिज़ मग़फिरत नहीं करेगा। बेशक अल्लाह नाफरमान क़ौम को हिदायत नहीं दिया

الْفٰسِقِيْنَ ۝٦ هُمُ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ لَا تُنْفِقُوْا عَلٰى مَنْ

करते। ये वही हैं जो केहते हैं के तुम खर्च मत करो उन पर जो

عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ حَتّٰى يَنْفَضُّوْا ؕ وَلِلّٰهِ خَزَآئِنُ السَّمٰوٰتِ

अल्लाह के पैग़म्बर के पास रेहते हैं ताके वो मुतफर्रिक़ हो जाएं। और अल्लाह के लिए आसमानों

وَالْاَرْضِ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَفْقَهُوْنَ ۝٧

और ज़मीन के खज़ाने हैं, लेकिन मुनाफिक़ समझते नहीं।

يَقُوْلُوْنَ لَئِنْ رَّجَعْنَاۤ اِلَى الْمَدِيْنَةِ لَيُخْرِجَنَّ

वो केहते हैं के अगर हम मदीना वापस गए तो इज़्ज़त वाला

الْاَعَزُّ مِنْهَا الْاَذَلَّ ؕ وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَ لِرَسُوْلِهٖ

मदीना से ज़लील को निकाल देगा। हालांके इज़्ज़त अल्लाह ही के लिए और उस के रसूल के लिए

وَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٨ ع ١٣

और ईमान वालों के लिए है, लेकिन मुनाफिक़ जानते नहीं।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ

ऐ ईमान वालो! तुम्हें तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद

وَلَاۤ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ

अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफिल न बना दें। और जो ऐसा करेगा तो यही

هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝٩ وَاَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ

खसारे वाले हैं। और हमारी दी हुई रोज़ी में से खर्च करो

مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِىَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ

इस से पेहले के तुम में से किसी एक की मौत आ जाए, फिर वो कहे ऐ मेरे रब!

لَوْلَاۤ اَخَّرْتَنِىْۤ اِلٰۤى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنْ مِّنَ

तू ने मुझे क़रीबी मुद्दत तक मुहलत क्यूं नहीं दी के मैं सदक़ा करता और नेक लोगों में

الصّٰلِحِيْنَ ۝١٠ وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَآءَ

से बन जाता। और अल्लाह किसी शख़्स को जब उस का आख़िरी वक़्त आ जाता है तो उसे हरगिज़ मुहलत

اَجَلُهَا ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝١١ ع ١٤

नहीं देता। और अल्लाह तुम्हारे अमल से बाख़बर है।

سُوْرَةُ التَّغَابُنِ مَدَنِيَّةٌ (١٠٨) (٦٤) اٰيَاتُهَا ١٨ رُكُوْعَاتُهَا ٢

और २ रूकूअ हैं सूरह तग़ाबुन मदीना में नाज़िल हुई उस में १८ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ لَهُ

अल्लाह के लिए तस्बीह करती हैं वो सब चीज़ें जो आसमानों और ज़मीन में हैं। उसी के लिए

الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۫ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝١

सल्तनत है और उसी के लिए तमाम तारीफें हैं। और वो हर चीज़ पर क़ुदरत वाला है।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّ مِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ؕ

उसी ने तुम्हें पैदा किया, फिर तुम में से कुछ काफिर हैं और तुम में से कुछ मोमिन हैं।

وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝٢ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ

और अल्लाह तुम्हारे अमल देख रहा है। उस ने आसमानों और ज़मीन को

وَ الْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۚ

पैदा किया हक़ के साथ और उस ने तुम्हारी सूरतें बनाईं, फिर उस ने तुम्हारी सूरतें अच्छी बनाईं।

وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝٣ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

और उसी की तरफ लौटना है। अल्लाह जानता है उन तमाम चीज़ों को जो आसमानों में हैं और ज़मीन में हैं

وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ

और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम छुपा कर करते हो और जो अलानिया करते हो। और अल्लाह दिलों का

بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٤ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

हाल ख़ूब जानता है। क्या तुम्हारे पास उन लोगों की ख़बर नहीं आई जिन्हों ने

مِنْ قَبْلُ ۫ فَذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ

इस से पेहले कुफ़्र किया। फिर उन्हों ने अपने किए का वबाल चखा और उन के लिए दर्दनाक

اَلِيْمٌ ۝۵ ذٰلِكَ بِاَنَّهٗ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ

अज़ाब है। ये इस वजह से के उन के पास उन के पैग़म्बर रोशन मोअजिज़ात ले कर

بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوْٓا اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا ۡ فَكَفَرُوْا

आते थे, तो वो केहते थे के क्या बशर हमें रास्ता बताएंगे? फिर उन्हों ने कुफ्र किया

وَتَوَلَّوْا وَّاسْتَغْنَى اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝۶ زَعَمَ

और रूगरदानी की और अल्लाह ने परवाह नहीं की। और अल्लाह बेनियाज़ है, क़ाबिले तारीफ है। काफिरों ने ये गुमान

الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ لَّنْ يُّبْعَثُوْا ؕ قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ

कर रखा है के वो क़ब्रों से हरगिज़ उठाए नहीं जाएंगे। आप फरमा दीजिए क्यूं नहीं! मेरे रब की क़सम!

لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ؕ وَذٰلِكَ

तुम क़ब्रों से ज़रूर उठाए जाओगे, फिर तुम्हें तुम्हारे अमल की खबर दी जाएगी। और ये

عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝۷ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالنُّوْرِ الَّذِيْٓ

अल्लाह पर आसान है। इस लिए तुम ईमान ले आओ अल्लाह पर और उस के पैग़म्बर पर और उस नूर पर जो हम ने

اَنْزَلْنَا ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝۸ يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ

उतारा है। और अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाखबर है। जिस दिन वो तुम्हें इकठ्ठा करेगा

لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ؕ وَمَنْ يُّؤْمِنْ

जमा होने के दिन में, वो हार जीत का दिन होगा। और जो अल्लाह पर ईमान

بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ

लाएगा और नेक अमल करता रहेगा, तो अल्लाह उस से उस की बुराइयाँ दूर कर देगा

وَيُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ

और उसे जन्नतों में दाखिल करेगा जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी,

خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝۹

जिन में वो हमेशा रहेंगे। ये अज़ीम कामयाबी है।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ

और वो लोग जिन्हों ने कुफ्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया वही दोज़खी

النَّارِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝۱۰ مَآ اَصَابَ

हैं, वो उस में हमेशा रहेंगे। और ये बुरी जगह है। कोई मुसीबत

مِنْ مُّصِيْبَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ

नहीं पहोंचती मगर अल्लाह के हुक्म से। और जो ईमान लाए अल्लाह पर

يَهْدِ قَلْبَهٗ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١١﴾ وَاَطِيْعُوا

तो अल्लाह उस के दिल को हिदायत देगा। और अल्लाह हर चीज़ को खूब जानते हैं। और अल्लाह

اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاِنَّمَا

और रसूल की इताअत करो। फिर अगर तुम रूगरदानी करो तो हमारे

عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿١٢﴾ اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ

पैग़म्बर के ज़िम्मे तो सिर्फ साफ साफ पहोंचा देना है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं।

وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٣﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ

और अल्लाह ही पर ईमान वालों को तवक्कुल करना चाहिए। ऐ ईमान

اٰمَنُوْۤا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ وَاَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ

वालो! यक़ीनन तुम्हारी बीवियों और तुम्हारी औलाद में से बाज़ तुम्हारे दुशमन हैं,

فَاحْذَرُوْهُمْ ۚ وَاِنْ تَعْفُوْا وَتَصْفَحُوْا وَ تَغْفِرُوْا

तो तुम उन से बचते रहो। और अगर मुआफ करो और दरगुज़र करो और बख्श दो

فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٤﴾ اِنَّمَاۤ اَمْوَالُكُمْ

तो यक़ीनन अल्लाह बहोत ज़्यादा बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तो सिर्फ

وَ اَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ؕ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗۤ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿١٥﴾

आज़माइश (का ज़रिया) हैं। और अल्लाह के पास बड़ा अज्र है।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوْا وَاَطِيْعُوْا

तो अल्लाह से डरो जितना तुम से हो सके और सुनो और खुशी से मानो

وَاَنْفِقُوْا خَيْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ ؕ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ

और खर्च करो, तो तुम्हारे लिए ही बेहतर होगा। और जो अपने नफ्स के बुख्ल से बचा

نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٦﴾ اِنْ تُقْرِضُوا

लिया जाए, तो वही लोग फलाह पाने वाले हैं। अगर तुम अल्लाह को

اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ

अच्छा क़र्ज़ दोगे तो वो उस को कई गुना कर के तुम्हें देगा और तुम्हारी मग़फिरत कर देगा।

وَاللّٰهُ شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿١٧﴾ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ
और अल्लाह क़दर करने वाला, हिल्म वाला है। वो ज़ाहिर और पोशीदा जानने वाला है,

الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٨﴾ ع ٢
ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है।

اٰيَاتُهَا ١٢ (٦٥) سُوْرَةُ الطَّلَاقِ مَدَنِيَّةٌ (٩٩) رُكُوْعَاتُهَا ٢
और २ रूकूअ हैं सूरह तलाक़ मदीना में नाज़िल हुई उस में १२ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَطَلِّقُوْهُنَّ
ऐ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! जब तुम औरतों को तलाक़ देने लगो तो उन को तुम तलाक़ दो

لِعِدَّتِهِنَّ وَاَحْصُوا الْعِدَّةَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ رَبَّكُمْ ۚ
उन की इद्दत पर और इद्दत शुमार करो। और अल्लाह से डरो जो तुम्हारा रब है।

لَا تُخْرِجُوْهُنَّ مِنْۢ بُيُوْتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ
तुम उन को उन के घरों से मत निकालो और वो खुद भी न निकलें

اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ؕ وَ تِلْكَ
मगर ये के वो खुली बेहयाई कर लें। और ये

حُدُوْدُ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَقَدْ
अल्लाह की मुक़र्रर की हुई हुदूद हैं। और जो अल्लाह की मुक़र्रर की हुई हुदूद से तजावुज़ करेगा, तो यक़ीनन

ظَلَمَ نَفْسَهٗ ؕ لَا تَدْرِيْ لَعَلَّ اللّٰهَ يُحْدِثُ
उस ने अपनी जान पर जुल्म किया। वो नहीं जानता के शायद अल्लाह उस के

بَعْدَ ذٰلِكَ اَمْرًا ﴿١﴾ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ
बाद कोई नई सूरत ले आए। फिर जब वो अपनी इद्दत की इन्तिहा (के क़रीब) पहोंच जाएं

فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ فَارِقُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ
तो उन को रोक लो उर्फ के मुताबिक़ या उन को उर्फ के मुताबिक़ छोड़ दो

وَّاَشْهِدُوْا ذَوَىْ عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَاَقِيْمُوا
और अपने में से दो आदिल आदमियों को गवाह बना लो और ठीक

الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ

गवाही दो अल्लाह के वास्ते। उस की नसीहत की जाती है उस शख्स को जो

يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ

ईमान रखता है अल्लाह पर और आखिरी दिन पर। और जो तक़्वा इखतियार करेगा

يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۙ﴿٢﴾ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ

तो अल्लाह उस के लिए रास्ता बनाएंगे। और उसे रोज़ी देंगे ऐसी जगह से जहाँ से वो गुमान भी

لَا يَحْتَسِبُ ؕ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ؕ

नहीं करता था। और जो अल्लाह पर तवक्कुल करे तो अल्लाह उस के लिए काफी है।

اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ؕ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَيْءٍ

यक़ीनन अल्लाह अपने हुक्म को इन्तिहा तक पहोंचाने वाला है। यक़ीनन अल्लाह ने हर चीज़ की एक मिक़्दार

قَدْرًا ﴿٣﴾ وَالّٰٓـِٔيْ يَئِسْنَ مِنَ الْمَحِيْضِ

मुतअय्यन कर रखी है। और जो औरतें हैज़ आने से मायूस हैं

مِنْ نِّسَآئِكُمْ اِنِ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ ۙ

तुम्हारी बीवियों में से, अगर तुम शक करो तो उन की इद्दत तीन महीने हैं।

وَّالّٰٓـِٔيْ لَمْ يَحِضْنَ ؕ وَاُولَاتُ الْاَحْمَالِ اَجَلُهُنَّ

और उन औरतों की भी जिन्हें अभी हैज़ नहीं आया (उन की इद्दत भी तीन महीने हैं)। और हमल वाली औरतों की इद्दत

اَنْ يَّضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ

ये है के वो अपना हमल वज़्अ कर लें। और जो अल्लाह से डरेगा तो अल्लाह उस के लिए

مِنْ اَمْرِهٖ يُسْرًا ﴿٤﴾ ذٰلِكَ اَمْرُ اللّٰهِ اَنْزَلَهٗٓ

उस के मुआमले में आसानी रख देंगे। ये अल्लाह का अम्र है जो उस ने तुम्हारी

اِلَيْكُمْ ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ

तरफ उतारा है। और जो अल्लाह से डरेगा, तो अल्लाह उस से उस के गुनाह दूर कर देगा

وَيُعْظِمْ لَهٗٓ اَجْرًا ﴿٥﴾ اَسْكِنُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ

और उस को बड़ा अज्र देगा। मुतल्लक़ा औरतों को घर दो जहाँ तुम

سَكَنْتُمْ مِّنْ وُّجْدِكُمْ وَلَا تُضَآرُّوْهُنَّ لِتُضَيِّقُوْا

रहो अपनी कुदरत के मुताबिक़ और तुम उन को ज़रर न पहोंचाओ ताके तुम उन

عَلَيْهِنَّ ؕ وَاِنْ كُنَّ اُولَاتِ حَمْلٍ فَاَنْفِقُوْا عَلَيْهِنَّ

पर तंगी करो। और अगर वो हामिला हों तो उन पर खर्च करो

حَتّٰى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَاِنْ اَرْضَعْنَ لَكُمْ فَاٰتُوْهُنَّ

यहाँ तक के वो अपना हमल वज़्अ कर लें। फिर अगर वो तुम्हारे लिए बच्चों को दूध पिलाएं

اُجُوْرَهُنَّ ۚ وَاْتَمِرُوْا بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوْفٍ ۚ

तो उन को उन की उजरत दो। (बच्चे के मुतअल्लिक़) आपस में उर्फ के मुताबिक़ ज़िम्मेदारी मुक़र्रर करो।

وَ اِنْ تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهٗٓ اُخْرٰى ۞٦ لِيُنْفِقْ ذُوْ سَعَةٍ

और अगर तुम बाहम तंगी करो, फिर उस के लिए कोई दूसरी औरत दूध पिलाए। तो चाहिए के वुस्अत वाला अपनी वुस्अत

مِّنْ سَعَتِهٖ ؕ وَمَنْ قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهٗ فَلْيُنْفِقْ

के मुताबिक़ खर्च करे। और जिस पर उस की रोज़ी तंग हो, तो चाहिए के वो खर्च करे उस में से

مِمَّآ اٰتٰىهُ اللّٰهُ ؕ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا مَآ اٰتٰىهَا ؕ سَيَجْعَلُ

जो अल्लाह ने उस को दिया है। अल्लाह किसी शख्स को मुकल्लफ नहीं बनाता मगर उसी के मुताबिक़ जो उस को दिया है।

اللّٰهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُّسْرًا ۞٧ وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ ع ١٦

अनक़रीब अल्लाह तंगी के बाद आसानी रख देंगे। और कितनी बस्तियाँ हैं

عَتَتْ عَنْ اَمْرِ رَبِّهَا وَ رُسُلِهٖ فَحَاسَبْنٰهَا حِسَابًا

जिन्हों ने सरकशी की अपने रब के हुक्म से और उस के पैग़म्बरों से, फिर हम ने उन से हिसाब लिया

شَدِيْدًا ۙ وَّعَذَّبْنٰهَا عَذَابًا نُّكْرًا ۞٨ فَذَاقَتْ

सख्त हिसाब और हम ने उन्हें सख्त अज़ाब दिया। फिर उन्हों ने

وَبَالَ اَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ اَمْرِهَا خُسْرًا ۞٩

अपने किए का वबाल चखा और उन के मुआमले का अन्जाम खसारे वाला हुवा।

اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ فَاتَّقُوا

अल्लाह ने उन के लिए सख्त अज़ाब तय्यार कर रखा है, तो अल्लाह से

اللّٰهَ يٰٓاُولِى الْاَلْبَابِ ۛۚ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۛ قَدْ مع عند المتقدمين ١٢

डरते रहो ऐ अक़्लमन्दो! जो ईमान ला चुके हो। अल्लाह ने

اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۞١٠ رَّسُوْلًا يَّتْلُوْا

तुम्हारी तरफ ज़िक्र उतारा है। रसूल भेजा जो

عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ مُبَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِيْنَ

तुम पर अल्लाह की रोशन आयतें तिलावत करते हैं ताके अल्लाह ईमान वालों को

اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ

और उन को जो नेक अमल करते रहे तारीकियों से नूर की

اِلَى النُّوْرِ ؕ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَ يَعْمَلْ

तरफ निकाले। और जो ईमान लाएगा अल्लाह पर और नेक अमल

صَالِحًا يُّدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا

करता रहेगा तो अल्लाह उसे जन्नतों में दाखिल करेगा जिन के नीचे से नेहरें बेहती

الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ قَدْ اَحْسَنَ

होंगी, जिन में वो हमेशा रहेंगे। यक़ीनन अल्लाह ने

اللّٰهُ لَهٗ رِزْقًا ﴿۱۱﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ

उस को बेहतरीन रोज़ी दी है। अल्लाह वो है जिस ने पैदा किए सात

سَمٰوٰتٍ وَّمِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ ؕ يَتَنَزَّلُ

आसमान और उतनी ही ज़मीनें। हुक्म उन के

الْاَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ

दरमियान उतरता है ताके तुम जान लो के अल्लाह हर चीज़ पर

شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۙ وَّ اَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ

कुदरत वाला है। और ये के अल्लाह का इल्म हर चीज़ को इहाता किए

ع ١٨/٢

شَيْءٍ عِلْمًا ﴿۱۲﴾

हुए है।

اٰيَاتُهَا ١٢ (٦٦) سُوْرَةُ التَّحْرِيْمِ مَدَنِيَّةٌ (١٠٧) رُكُوْعَاتُهَا ٢

उस में १२ आयतें हैं सूरह तहरीम मदीना में नाज़िल हुई और २ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ ۚ

ऐ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! आप क्यूं हराम करते हो उस चीज़ को जो अल्लाह ने आप के लिए हलाल की है?

تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ

आप अपनी बीवियों की ख़ुशनूदी चाहते हो। और अल्लाह बख़्शने वाला,

رَّحِيْمٌ ۝١ قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْ ۚ

निहायत रहम वाला है। अल्लाह ने तुम्हारे लिए मुक़र्रर किया है तुम्हारी क़स्मों को खोल देना।

وَاللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝٢

और अल्लाह तुम्हारा मौला है। और वो इल्म वाला, हिक्मत वाला है।

وَاِذْ اَسَرَّ النَّبِيُّ اِلٰى بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ حَدِيْثًا ۚ

और जब के नबीए अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अपनी एक ज़ौजअे मुतह्हरा से चुपके से एक बात कही।

فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَاَظْهَرَهُ اللّٰهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ

फिर जब उस उम्मुल मोमिनीन ने उस की खबर दे दी और अल्लाह ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को इस पर मुत्तलेअ कर दिया, तो आप

بَعْضَهٗ وَاَعْرَضَ عَنْۢ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ

(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उस में से कुछ बतला दिया और कुछ बताने से ऐराज़ फरमाया। फिर जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उस

قَالَتْ مَنْ اَنْۢبَاَكَ هٰذَا ؕ قَالَ نَبَّاَنِيَ الْعَلِيْمُ

उम्मुल मोमिनीन को उस की खबर दी, तो वो केहने लगीं के आप को इस की किस ने खबर दी? तो नबीए अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

الْخَبِيْرُ ۝٣ اِنْ تَتُوْبَاۤ اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ

ने फरमाया के मुझे इल्म वाले, बाखबर अल्लाह ने खबर दी। अगर तुम दोनों बीवियाँ अल्लाह की तरफ तौबा करोगी (तो बेहतर), तुम दोनों के

قُلُوْبُكُمَا ۚ وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ

दिल टेढ़े हो गए हैं। और अगर तुम दोनों आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के खिलाफ एक दूसरे की मदद करोगी, तो अल्लाह आप

وَجِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ

(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की मदद करेगा और जिबरील और नेक मुसलमान। और उस के

بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِيْرٌ ۝٤ عَسٰى رَبُّهٗۤ اِنْ طَلَّقَكُنَّ

बाद फरिशते भी मददगार हैं। अगर नबीए अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तुम्हें तलाक़ दे दें

اَنْ يُّبْدِلَهٗۤ اَزْوَاجًا خَيْرًا مِّنْكُنَّ مُسْلِمٰتٍ

तो हो सकता है के उन का रब नबीए अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को तुम से बेहतर बीवियाँ बदले में दे दे इस्लाम वालियाँ,

مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰٓئِبٰتٍ عٰبِدٰتٍ سٰٓئِحٰتٍ

ईमान वालियाँ, खुशूअ करने वालियाँ, तौबा करने वालियाँ, इबादत करने वालियाँ, रोज़ा रखने वालियाँ हों,

ثَيِّبٰتٍ وَّ اَبْكَارًا ۝٥ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

सय्यिबा और बाकिरा। ऐ ईमान वालो!

قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ

अपने आप को और अपने घर वालों को आग से बचाओ जिस का ईंधन इन्सान

وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ

और पथ्थर होंगे, जिस पर सख्तमिज़ाज सख्ती करने वाले फरिशते हैं,

لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ وَ يَفْعَلُوْنَ

वो अल्लाह की नाफरमानी नहीं करते उस में जो अल्लाह उन्हें हुक्म दे और वो करते हैं वही जिस का उन्हें

مَا يُؤْمَرُوْنَ ۝٦ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا

हुक्म दिया जाता है। ऐ काफिरो! आज उज़्र मत पेश

ع ١٩ الْيَوْمَ ۭ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٧

करो। तुम्हें सिर्फ सज़ा दी जाएगी उन्ही कामों की जो तुम करते थे।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً

ऐ ईमान वालो! अल्लाह की तरफ तौबअे नसूह

نَّصُوْحًا ۭ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ

करो। उम्मीद है के तुम्हारा रब तुम से तुम्हारी बुराइयाँ दूर

سَيِّاٰتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ

कर देगा और तुम्हें जन्नतों में दाखिल करेगा जिन के नीचे से

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ يَوْمَ لَا يُخْزِي اللّٰهُ النَّبِيَّ

नेहरें बेहती होंगी। जिस दिन नबी को और उन को जो उन के साथ ईमान लाए हैं

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۚ نُوْرُهُمْ يَسْعٰى بَيْنَ

अल्लाह रुस्वा नहीं करेंगे। उन के आगे और उन की दाईं जानिब

اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَتْمِمْ لَنَا

उन का नूर दौड़ रहा होगा, वो केह रहे होंगे ऐ हमारे रब! तू हमारे लिए हमारे नूर को इत्माम तक

نُوْرَنَا وَاغْفِرْ لَنَا ۚ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٨

पहोंचा और हमारी मग़फिरत कर दे। यक़ीनन तू हर चीज़ पर कुदरत वाला है।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِىُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ

ऐ नबी! आप काफिरों से और मुनाफिक़ीन से जिहाद कीजिए

وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ

और उन पर सख्ती कीजिए। और उन का ठिकाना जहन्नम है। और वो बुरी

الْمَصِيْرُ ۝٩ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا امْرَاَتَ

जगह है। अल्लाह ने काफिरों के लिए मिसाल बयान की नूह (अलैहिस्सलाम)

نُوْحٍ وَّامْرَاَتَ لُوْطٍ ؕ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ

और लूत (अलैहिस्सलाम) की बीवियों की। जो दोनों हमारे बन्दों में से दो नेक बन्दों की

مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا

मातहती में थीं, फिर दोनों ने उन दोनों नबियों से खयानत की, फिर वो दोनों नबी अल्लाह के मुक़ाबले

عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا وَّقِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ

में उन दोनों के कुछ काम नहीं आए और कहा गया दोनों बीवियों से के आग में दाखिल हो जाओ

مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ۝١٠ وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ

(जहन्नम में) दाखिल होने वालों के साथ। और अल्लाह ने मिसाल बयान की ईमान वालों

اٰمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ ۘ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِىْ وقف لازم

के लिए फिरऔन की बीवी (आसिया) की। जब के उस (आसिया) ने कहा के ऐ मेरे रब! मेरे लिए

عِنْدَكَ بَيْتًا فِى الْجَنَّةِ وَ نَجِّنِىْ مِنْ فِرْعَوْنَ

अपने पास जन्नत में एक घर तामीर कर और तू मुझे फिरऔन और उस के अमल

وَ عَمَلِهٖ وَ نَجِّنِىْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝١١ۙ

से नजात दे और तू मुझे ज़ालिम क़ौम से नजात दे।

وَ مَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِىْۤ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا

और मिसाल बयान की मरयम बिन्ते इमरान (अलैहिमस्सलाम) की, जिस ने अपनी शर्मगाह की हिफाज़त की,

فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا وَ صَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ

तो फिर हम ने उस में अपनी रूह फूंक दी और उस ने अपने रब के

رَبِّهَا وَ كُتُبِهٖ وَكَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِيْنَ ۝١٢ ع ٢

कलिमात और अल्लाह की किताबों की तस्दीक़ की और वो फरमांबरदारों में से थीं।